आपातकाल में सृजन फुलवारी

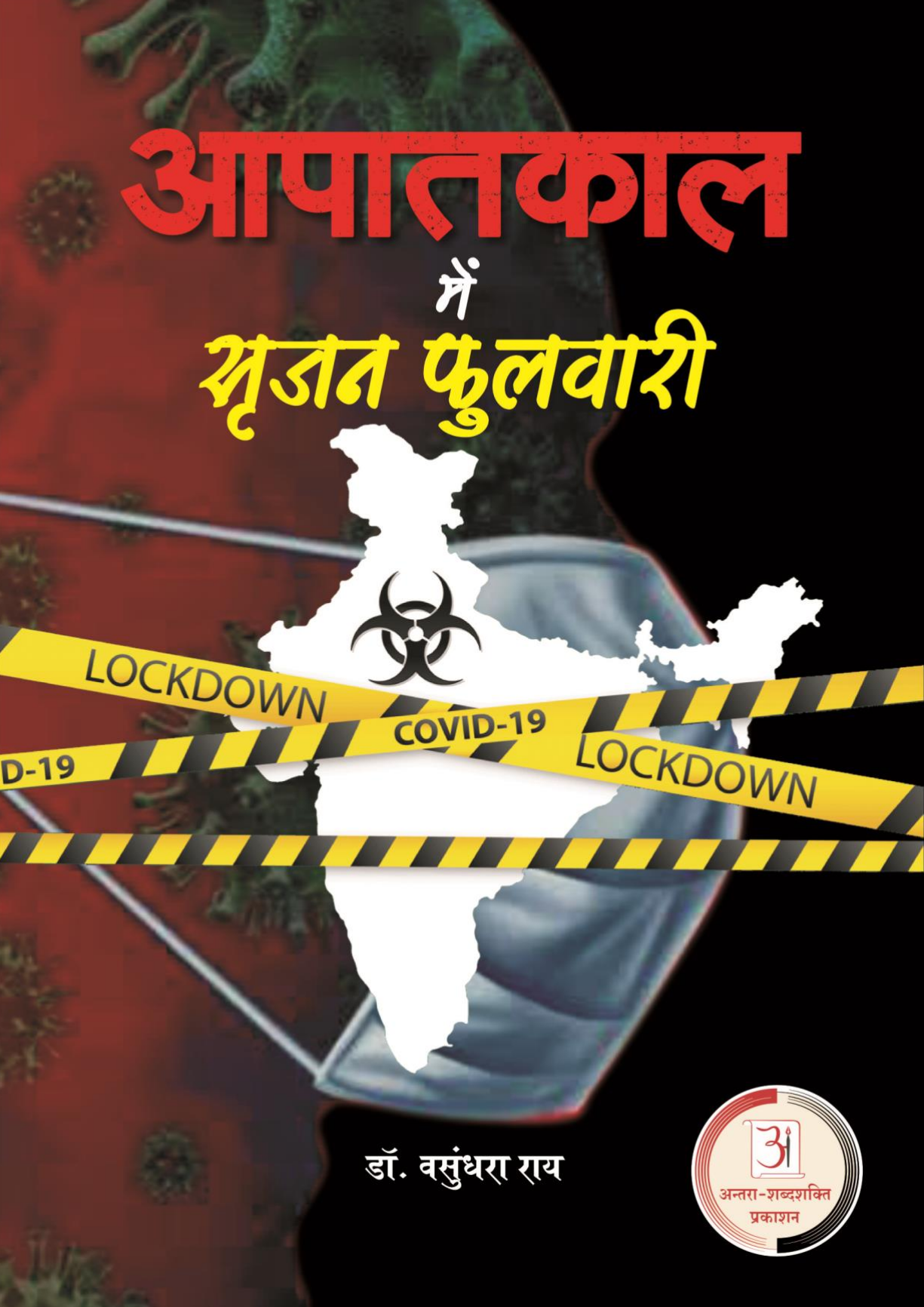

डॉ. वसुंधरा राय

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. वसुंधरा राय

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-157-2

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, डॉ. वसुंधरा राय

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DR VASSUNDHARA RAI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	मुझमें ही रहो विलय होकर	6
2.	मैं से मिली मैं	7
3.	उत्साही कदम बढ़ाओ	8
4.	परिवर्तन	9-10
5.	कश्मीर	11
6.	उम्र का एक हिस्सा	11
7.	मैं देह भर नहीं मात्र	12
8.	मृत्यु के बाद भी	13
9.	आशा हूँ मैं	14
10.	वसीयत	15
11.	भेद से परे	16
12.	वसुंधरा	17
13.	कोरोना	18
14.	जिंदगी	19
15.	हर धर्म कुर्बान है	20
16.	माँ भारती	21

मुझमें ही रहो विलय होकर

मन से मन का मिलना, हांथ में हांथ लेकर चलना
दे मान जब बैठ गये तुम चरणों में आकर
फिर मिलुंगी चल पड़ी इसी आस पर...।

प्रियसी सा तन और प्राण, तुमसे मिलकर किया अमृत पान
आ जाना प्रीत संसार के बंधन तोड़कर
रखना अधिकार मेरी अंतिम सांस पर...।

बिन बंधन का ये बंधन, क्षण प्रति क्षण तुम्हारा दर्शन
तुम करो समर्पण मुझमें ही रहो विलय होकर
द्वंद्वों का युद्ध जीत बैठो मेरे ही पास पर!!

हृदय में अपना प्रेम भर, नयनों से मुग्ध अश्रुभर
निर्भय हो देखना तुम ही जी भर कर
चल पड़ुं मैं जब आंतिम वास पर....।

मैं से मिली मैं

अपना मैं भूल जो तेरे मैं से मिली मैं
सुधबुध खोकर न जाने कहां चली मैं

मसरूफ़ियत में जाने क्यों वो क़रीब आया
तिल- तिल तेरे इश्क़ में देख कैसी जली मैं

तु क्या और तेरी मौहब्बत क्या नहीं समझी
वो क्या था क्या रहा सोच रात-रात जगी मैं

न जाने क्या मांग लिया था तुझसे ऐसा मैने
तेरा तु जाने मनमीत टूट के भी रही भली मैं

तेरी नज़र में तु मेरे साथ नहीं मगर देख
तेरे ख़्यालों के ख़्याल से कैसी खिली मैं

उत्साही कदम बढ़ाओ

पुलकित चित्त उत्साही कदम बढाओ
नव वर्ष है साथी मंगल गीत गाओ

अपमान जो पिछले बरस छूट गया
छूट जाने दो जो छूट गया, किंतु व्यवहार
सफल दिशा पर आनंद गीत दोहराओ
नव वर्ष है साथी मंगल गीत गाओ

भिन्न भिन्न धाराएं सागर कर देना
हृदय विश्वास विस्तार भाव भर देना
असीम प्रेम वैभव अपार सुख पाओ
नव वर्ष है साथी मंगल गीत गाओ

ईर्ष्या, निंदा नीरव स्वयं को पहचान जरा
नील की नीलमा आमंत्रित करती वसुंधरा
गहन अंधेरे पर विजयी रवि से हो जाओ
नव वर्ष है साथी मंगल गीत गाओ

पुलकित चित्त उत्साही कदम बढाओ
नव वर्ष है साथी मंगल गीत गाओ

परिवर्तन

परिवर्तन होगा साल समय का, आचरण वही पुराने होंगे!
भविष्य की नाटकशाला में, किरदार वही पुराने होंगे!

साधु संत द्धारा गीता का
उपदेश दिया जाएगा
माया के मोह में युवा छोड देश जाएगा
जीवन का मोह कैसा?
शरीर मिट्टी है मिट्टी में ही मिल जाएगा,
किंतु सत्य यही,
जन्म मृत्यु के मध्य
भोगी भ्रमित हो निश्चित
रंगमहल सजाएगा
क्योकि... आचरण वही पुराने होगे।

मेघहीन मन का आकाश,
आंखो मे रुका जल भार
जीवन का छुपा कर
क्रंदन चलता रहेगा संसार
स्वार्थ, ईर्ष्या में
मानव की आकांक्षाओं का
करूण कुंठित हाहाकार
सतरंगी अभिलाषाएं होंगी जिसका आधार
क्योकि... आचरण वही पुराने होगे।

पीडनमय भौतिकता में प्रसन्न हो गिरेंगे
विफल हो अविज्ञात काल को कोसेंग
अति अज्ञानी अभिमानी तमाशा देखेंगे
सुबोध सत्यापित कोने मे सिसकेंगे
क्योकि... आचरण वही पुराने होगे।

मानव का मानव पर होगा अत्याचार
दूर कहीं अनदेखी होगी चीख पुकार
दुष्ट कहीं फिर कर रहा होगा बलात्कार
भय से कोई निर्भया तडप
जीवन से जाएगी हार
क्योकि... आचरण वही पुराने होगे।

जीवन के सुख अमृत,
विष जैसे त्रास में
छुप जाएगा यह साल भी
काल के इतिहास मे
अच्छी बुरी घटनाओं के कलमास में
किंतु तुम रुकना नहीं पथिक अपने उजवास में
परिवर्तन होगा समय साल में
क्योकि,.. आचरण वही पुराने होंगे...!

कश्मीर

370 की बेड़ियां जो टूटी-टूटी पाई
देखो-देखो कश्मीर कैसे आज मुस्काई

कोमल-कोमल अंगो को हरियाली ने सजाया है
70 सालों के बंधन को तोड़ निखर के आई

मृदुल मधुर झंकारों में राग और आलापों में
कश्मीर ने भी आज तुलसी सी चौपाई गाई

मुग्ध मुदित नयनों से नव-नव रूपों में
दुल्हन सी कश्मीर देख हिमाचल शरमाई

उम्र का एक हिस्सा

उम्र का एक हिस्सा सिर्फ मेरा ही रहने दो
हिस्से में सिर्फ मुझे मेरे लिए ही जीने दो

हो नहीं तुम मेरे पूरे अधूरे से हो उदय
धैर्य धर मन! मन से मन पर पूर्ण उगने दो

थाम मेरा हाथ चलो बैठो मन के द्वार पर
प्रेम स्पर्श के साथ उस क्षण उत्सव बनने दो

दो धाराओं के मध्य हुआ मन व्याकुल बेचारा
नहीं करनी प्रतीक्षा मन से मन को मिलने दो

मै देह भर नहीं मात्र

मैं देह भर नहीं मात्र!
मत हो मेरी देह के कायल तुम
मुझमें मेरा मन भी है,
दिमाग और गुण भी है
देह से परे भी मेरा अस्तित्व है!
देखा है कभी तुमने?
मैं सृष्टि हूं और तुम मेरा सृजन
स्वीकार लो मेरे साहस को
जो बड़े दर्द सहकर आया है मुझमें
तुम्हारे लिए ही!
मेरी खुरदुरे हाथों से लेकर
फटी हुई ऐड़ियों में,..
मेरे सौंदर्य को कभी प्रेम से निहारा है तुमने?
छुपे श्रम क्षमता और साहस को देखा है तुमने?
आज आ जाओ मेरे मिट्टी से आलिंगन में,
मेरे कायल हो जाओ
और
बना दो स्वयं को स्तरीय!
है साहस?

मृत्यु के बाद भी

जन्म निधन के मध्य जीवन
पर कैसा होगा परिचय तुम्हारा
सुख दुख के मंच पर
तन कैसा होगा अभिनय तुम्हारा
दीर्घायु के पथ पर कुछ
ऐसे क्षण आएंगे जहां
विवेक की ताल पर
कैसा होगा स्वर लय तुम्हारा
चलो जब विजय मार्ग पर
तब स्पर्श ना हो अभिमान तुम्हारा
हां सफल होना बहुत सफल हो जाना
साथ रखना स्वाभिमान तुम्हारा
चांद सितारों में तुम्हीं तुम होगे
हँसकर कहती हूं ये है
संशय तुम्हारा
यश-अपयश छोड़गे
इसी वसुंधरा पर
मात्र सत्य यही मृत्यु ही आशय तुम्हारा
स्वप्नों के अधिकांश भागों को मृत्यु के बाद भी
जीवित तुम कैसे कर सकोगे
खुली आंखों से कैसे पूरा करोगे
कर्म करेगा ये निर्णय तुम्हारा

आशा हूं मै

तुम बहुत छुपे छुपे चुप चुप से हो
हां लेकिन विरोधाभास ये है कि तुम
बहुत बहुत बोलते हो चुप ही नहीं होते हो!!
तुम्हारे अंदर का जो सन्नाटा है ना
उसमें बहुत शोर है सच में!
खाली खाली सा भीतर जो वो कोना है ना
उसी को भरने की कोशिश हूं मैं!
तुम बहुत चिल्लाते हो लेकिन तुम्हारा चिल्लाना
चिल्ला कर मुझ पर बरस जाना
झुंझलाहट भर गुस्से में
ना जाने क्या क्या कह जाना
और मैं ठीक है कह कर सब सुनती हूं मालूम है क्यों?
क्योंकि मैं सुन रही हूं तुम्हारी अनकही भावनाओं को
जहां वेदना ही वेदना है उस वेदना की संवेदना हूं मैं!
भीतर के अंधेरे में छुप कर तुम्में जो बच्चा बैठा है ना!
डरता है जो दुनिया की रौशनी से
पिछले किस्सों को जीते हुए
उस बच्चे की आज की खुशियों का हिस्सा हूं मैं!
तो क्या हुआ जो मुझे तुम देख नहीं पाते
क्योंकि उलझे जो हो तुम!
तुम्हारी निराशाओं में मुस्कान लिए आशा हूं मैं

वसीयत

सुनो पढ़ना उन ख़तों को ज़रूर
जहां तुम मुझसे पहली बार मिलोगे
जानोगे कि मैने तुमसे
क्या चाहा था और पाया क्या?
न जाने कितनी बार कहा होगा तुमने मुझसे
मेरे लिए तुम्हारे पास क्या है?
आज जब सफर तय करने की बात आ ही गयी
तो सुनो तुम्हारे लिए मैंने
लिखें हैं कुछ ख़त
जहां ख़तों में मिलेगी मेरी तन्हाई!
कितना अजीब सा दौर चला है
तुम्हारे और मेरे बीच
एक छत के नीचे रहकर भी
अंजानों सा रहना
चलो आज मेरी वसियत में तुम्हारे लिए
छोड़ कर जाती हूं मेरी पहचान!

भेद से परे

मैं भेद से परे वहां हूं जहां तुम और तुम्हारा अस्तित्व
विस्तृत दिखता तो है किंतु वैसा होता नहीं
जैसा होना चाहिए हां मैं भेद से परे होकर
बिल्कुल तुम्हारी जैसी ही बातें कर लेती हूं
हँस लेती हूं और छू लेती हूं अपने शब्दों से
तुम्हारे प्रिय विषयों को किंतु तुम मेरे खुलेपन को
देख संकीर्ण हो जाते हो और तब....
उतर जाती है तुम्हारी मर्यादा!
तब तुम सही अर्थों में बहुत निम्नता लिए
मेरे सामने खड़े हो जाते हो
उल्लंघित सीमा की पगडंडी पर विचरते दिखते हो
संकीर्ण मानसिकता के साथ लेकिन तब मैं विस्तार हो
तुम पर हँसकर आगे बढ़ जाती हूं
जहां स्त्री पुरुष का कोई भेद नहीं होता
हां मैं ऐसी सोच हूं जहां मैं स्त्री या पुरुष नहीं रह जाती
बल्कि विस्तृत हो विस्तार पथ पर अग्रसर होती जाती हूं
समझे कुछ पुरूष!!

वसुंधरा

जो चलता रहे जीवन है वही
ऊर्जा तुम कर लो गहन यहीं

उपजी ऊर्जा से हँस लो हँसा लो
सुख के संग संघर्ष सहन हो यहीं

समय है! कौन पकड़ पाया है इसे
रिश्तों की गरमाहट छुअन है यहीं

महसूस करना तुम अपने आप में
मौसमी साथियों की पहचान यहीं

गिरना,उठना,चलना होगा तुमको
ज़हर पी रखना होगा मुस्कान यहीं

विश्वास के दीपों में जलना ही होगा
वसुन्धरा पे नख टिका गोवर्धन यहीं

कोरोना

भर कर साँसो में घुटन, बन गये हो अंजान।
इँसानियत को छोड़ कर, ले ली कैसे जान।।

चीनी की करतूत ये, मानव है बेहाल।
पड़ गया है संसार में, कैसा ये आकाल।।

किया कपट तुमने यहां, मन को देकर पीर।
दिखती प्रलय य यहां-वहां, रोग चुभाते तीर।।

दूर दूर यू हो गये, ऐसा किया प्रहार।
बॉट दिया तुमने ज़हर, वसुधा है लाचार।।

नहीं फलेगा छल-कपट, हैं तो कई प्रमाण।
रावण ही हारे यहां, राम हरे हैं प्राण।।

ज़िन्दग़ी

दिखी तन्हा उदास थोड़ी सी उससे बात हो गयी
यूं ही ज़िंदगी से आज मेरी मुलाक़ात हो गयी

मैंने पूछा क्या हुआ तुमको ये उदासी क्यों है
किश्तों में मिली खुशी लगें जैसे खैरात हो गयी

बस्तियों में जाकर उसने दे दिया पैग़ाम ज़रा सा
ताजदार आएगा वहां हालातों की तहकिकात हो गयी?

यादों की चादर में बहुत से पैबंद दिखे मुझको
मिलेगा कोई बिछड़ेगा बेचैनी की शुरुआत हो गयी

बीच चौराहे पर हाथ फैलाए न जाने कौन थी वसु
ख़ास नहीं मुस्कान मगर मेरे लिए सौगात हो गयी

हर धर्म कुर्बान है

देश के शहीदों की कुर्बानियां कभी तुम न भूलना
जय हिंद पे मिटी जवानियां कभी तुम न भूलना

गणतंत्रदिवस शुभदिन पर कहती हैं मां भारती
सदियों बाद मिली आज़ादी को कभी तुम न भूलना

देश पर मर मिटे कुछ महान शहीद गुमनाम हैं
मज़हब से ऊपर हमारा ये वतन हिंदूस्तान है

भारत की सीमा पर ही दीवाली ईद त्यौहार है
निजस्वार्थ से परे आज़ादी पे हर धर्म कुर्बान है

मां भारती

तिरंगा लहर देख मां भारती गर्व से इतराती हो
शहिद का शव देख तब मृत्यु तुम मुस्काती हो

मृत्यु भी झूम झूम कर अपनी धुन में गाती है
इंकलाब ज़िंदाबाद नारों से वसुधा गूंजती हो

जान देने को जवानी तुम तब कहां थमती हो
जब विविध रूपों में तुम सजती संवरती हो

कर स्वतंत्र श्रंगार जैसे घूंघट में तुम हँसती हो
तिरंगा लहर देख मां भारती गर्व से इतराती हो,..!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

समय, हाँ! समय कभी एक जैसा नहीं रहता! वर्तमान में विश्व कोरोना जैसी महामारी से संघर्षमयी जीवन जीने के लिए विवश है तथा इस विवशता से भारत भी अछूता नहीं है लेकिन समय है जिसका कार्य ही है गतिमान होना तो ये समय भी निकल जाएगा और इसी विवशता को या मजबूरी को साकारात्मक रूप से गृहण किया है अन्तरा शब्दशक्ति की संस्थापिका डॉ. प्रीती सुराना जी व उनकी टीम ने एक परिवार का मुखिया जब अपने परिवार के प्रति जिम्मेदारी समझ कर कर्तव्यपूर्ण दृढ़ रहता है तो उस परिवार में कभी नाकारात्मक विचारों का कोई स्थान नहीं होता ठीक उसी प्रकार अंतरा शब्दशक्ति भी अपने परिवार को सृजनात्मक ढंग से बांधने में सफल रहा है।

एक सृजनशील के लिए मानो उसकी लेखनी में प्राण फूंकने का कार्य प्रीति जी कर रही हैं जो निश्चित रूप से सराहनीय है। उन्होंने भावानात्मक नमी को कलम के माध्यम से सृजनकर्ता को इस विषम परिस्थिति में नव ऊर्जा के साथ नवीन मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है।

डॉ. प्रीति समकित सुराना जी एवं अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की पूरी टीम को हार्दिक बधाई के साथ साथ धन्यवाद भी उन्होंने सभी के भीतर एक आशा का बीज अवश्य दिया है कि समय है जो गतिमान है हम सब एक परिवार की भांति एक साथ वर्तमान परिस्थिति का सामना कर नवसृजन मार्ग पर एक साथ भ्रमण करेंगे।

रचनाकार
डॉ. वसुंधरा राय
अध्यक्ष
स्व.विश्वनाथ राय बहुउद्देशीय संस्था
शब्द सुगंध, नागपुर (महाराष्ट्र)
Email- vassundhararai@gmail.com
Mobile - 9623692255

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-157-2
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/